P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रतापगढ़ जनपद में कृषि का स्तर एवं फसल प्रतिरूप का एक अध्ययन

गंगेन्द्र बहादुर सिंह
प्रधानाचार्य,
महात्मा गाँधी इण्टर कालेज,
बहुचरा, प्रतापगढ़

सारांश

आज सिंचाई के साधनों की प्रचुरता, उत्तम किस्म के संशोधित बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक दवाओं के साथ आधुनिक कृषि यंत्रों आदि के प्रयोग से कृषि के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है। कृषि फसलों में प्रति हेक्टेयर बढ़ती उत्पादकता इसका अभिसूचक है। प्रतापगढ जनपद में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 345481 हेक्टेयर भागों पर कृषि की जाती है। यहाँ की लगभग 86 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है। इस क्षेत्र में उद्योग धन्धों तथा अन्य आर्थिक क्रियाओं का विकास अल्प मात्रा में हुआ है। वर्तमान में कृषि तकनीकी, कीटनाशक दवाओं व रासायनों के साथ उन्नतिशील बीजों की आपूर्ति का प्रभाव यहाँ की कृषि पर परिलक्षित है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र प्रतापगढ़ जनपद में किसी का स्तर एवं फसल प्रतिरूप का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : सिंचाई, आर्थिक क्रियाओं, कीटनाशक दवाईयाँ, रसायनों, फसल

प्रस्तावना

कृषि एक अत्यन्त ही व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत मानव साधारण से लेकर अत्यन्त जटिल क्रियाओं द्वारा भूमि का उपयोग अपने लाभ के लिए भूमि से खाद्यान्न और कच्चा माल प्राप्त करने के लिए करता है। इन सामान्य क्रियाओं के अतिरिक्त कृषि के अन्तर्गत फलोत्पादन, वृक्षारोपण, घासें तथा दाल वाली फसलें पैदा करना, पशु पालन एवं मछली पकड़ना भी आता है। कृषि–क्रिया इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार मानव को वातावरण अपने अनुकूल बनाता है। कृषि का मुख्य उद्देश्य मानव के लिए भोजन और कच्चे माल का उत्पादन करना है। अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों के उत्पादन प्रचुरता है। यहाँ दो फसली क्षेत्र होने के कारण कृषि विकास तेजी के साथ हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में साथ–साथ तिलहन एवं दलहनी आदि नगदी फसलों के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। यहाँ ऊसर एवं बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में एक फसली क्षेत्र का विस्तार अधिक देखने को मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रतापगढ़ जनपद का भौगोलिक परिचय : जनपद प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश के द0पू0 भू–भाग में 25^0 34′ से 26^0 11′ उत्तरी अक्षांश तथा 81^0 19′ से 81^0 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य 3717 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र पर विस्तृत है। जनपद प्रतापगढ़ की उततरी सीमा सुल्तानपुर, पश्चिमी सीमा रायबरेली, पूर्वी सीमा जौनपुर, दक्षिणी सीमा कौशाम्बी एवं द0 सीमा इलाहाबाद जनपदों से आबद्ध है। जनपद का सामान्य आकार आयताकार है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से यह जनपद 5 तहसीलों (कुण्डा, लालगंज, सदर, रानीगंज, एवं पट्टी) हैं एवं 17 विकास खण्ड, 171 न्याय पंचायतें एवं 7708 ग्राम पंचायतें हैं। जो उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.26 प्रतिशत वर्ग किमी0 है जो मण्डल के कुल क्षेत्रफल का 24.57 प्रतिशत है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में निम्न साहित्यों का अध्ययन किया गया है–आर0सी0 तिवारी एवं बी0एन0 सिंह (2016): कृषि भूगोल के अन्तर्गत कृषि के स्तर एवं फसल प्रतिरूप का वर्णन किया गया है। एस0के0 ओझा (2015–16) : कृषि एवं प्रौद्योगिकी में कृषि के स्तर, विभिन्न फसलों के उत्पादन का विस्तृत वर्णन है। भूगोल और आप (मार्च, अप्रैल 2018): इसरो विशेषांक, जगदीश सिंह (2003) आर्थिक भूगोल, डॉ0 विमलेश कुमार पाण्डेय (2007) : भारत का प्राचीन एवं पुरातत्व, जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2017–18)। योजना पत्रिका (मार्च 2018), कुरूक्षेत्र पत्रिका (अप्रैल 2017)।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रतापगढ़ जनपद (उ0प्र0)

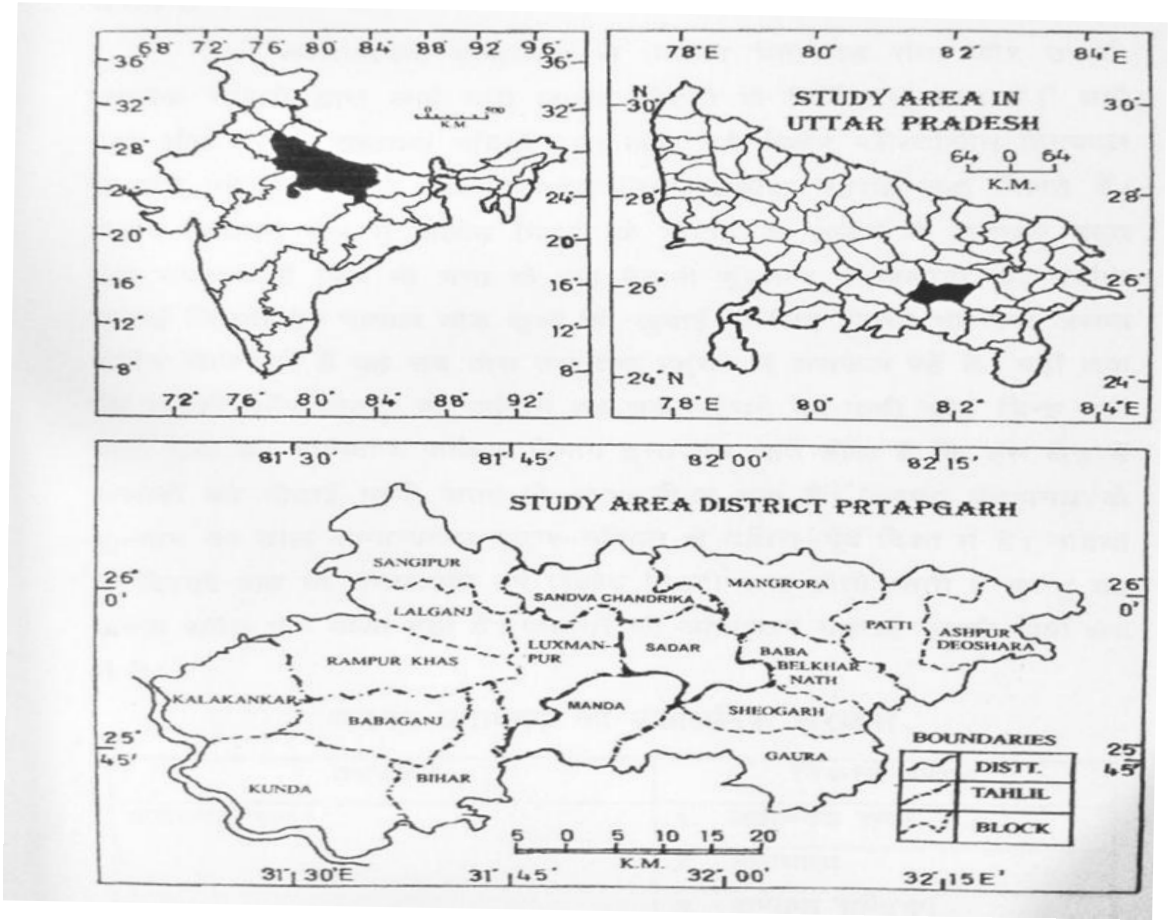

अध्ययन का उद्देश्य

1. जनपद प्रतापगढ़ में कृषि का स्तर का अध्ययन करना।
2. प्रतापगढ़ जनपद में फसल प्रतिरूप का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

शोध–पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकार्य से सम्बन्धित द्वितीयक आंकड़ों का संकलन जिला सांख्यकीय पत्रिका के तथ्यों के आधार पर किया गया है। चयनित आँकड़ों तथा प्रतिदर्शों को विभिन्न घटनाओं एवं वितरणों के आधार पर एकत्र कर विभिन्न चरणों के परिपेक्ष्य में उनका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि का स्तर मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल

जनपद–प्रतापगढ़ वर्ष–2015–16
कुल क्षेत्रफल–345481 (100.00)

प्रमुख फसलें	उत्पादन (हेक्टेयर में)	कुल भूमि पर प्रतिशत
गेहूँ	168495	48.77
चावल	125108	36.21
कुल दाल	24434	7.07
कुल तिलहन	2131	0.62
बाजरा	9527	2.76
ज्वार	3218	0.93
अन्य फसल	12568	3.64
	345481	**100.00**

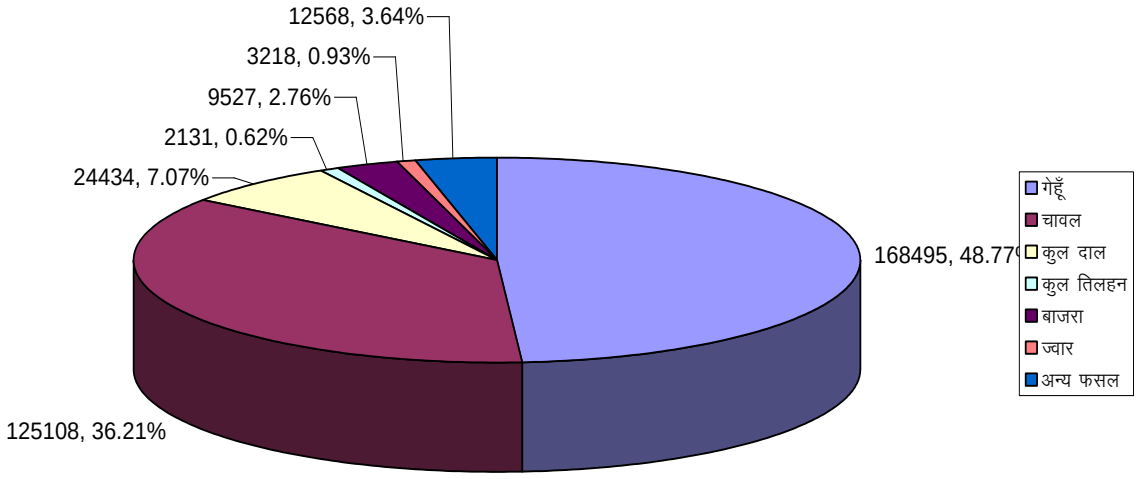

गेहूँ

गेहूँ रबी की प्रमुख फसल है, जिसका उत्पादन यहाँ बड़ी मात्रा में होता है यह शीतोष्ण कटिबन्धीय पौधा है। यहां गेहूँ का उत्पादन भूमि 168495 हेक्टेयर है जो कुल कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत 48.77 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक उत्पादन गौरा विकासखण्ड में 1384 हेक्टेयर भूमि पर है।

चावल

प्रतापगढ़ जनपद में चावल का खाद्यान्न फसलों से दूसरा स्थान है। चावल का कुल उत्पादन भूमि 125108 हेक्टेयर है, जो कृषि क्षेत्र का 36.2 प्रतिशत है, सर्वाधिक उत्पादन बिहार विकासखण्ड में 13454 हेक्टेयर भूमि पर है। चावल उष्णकटिबन्धी पौधा है। यह उच्च तापमान और अच्छी वर्षा वाले क्षेत्र में उत्पादित होता है। चावल की खेती के लिए भौगोलिक दशायें अनुकूल हैं। चावल के लिये चिकनी मिट्टी सर्वाधिक उपयुक्त है। जनपद में चावल की खेती का कार्य दो विधियों से किया जाता है। जिसमें छिड़काव तथा रोपाई विधि प्रमुख है।

ज्वार एवं बाजरा

चावल की तरह ज्वार एवं बाजरा यहां का प्रमुख फसल है। जनपद में ज्वार की कुल उत्पादन भूमि 3218 हेक्टेयर है जो कुल कृषि क्षेत्र का 0.93 प्रतिशत है। इसका सर्वाधिक उत्पादन सांगीपुर विकासखण्ड में 865 हेक्टेयर भूमि पर है। इसी प्रकार बाजरा का कुल उत्पादन भूमि 9527 हेक्टेयर है जो कुल कृषि क्षेत्र का 2.76 प्रतिशत है। बाजरा का सर्वाधिक उत्पादन मान्धाता विकासखण्ड में 1460 हेक्टेयर भूमि पर है।

दलहन

प्रतापगढ़ जनपद में खाद्यान्नों के साथ विधि प्रकार की दलहनी फसलों जैसे– उर्द, मूंग, मसूर, मटर, चना, अरहर पैदा की जाती है। प्रोटीन का प्रमुख साधन दलहनी फसलें हैं। अध्ययन क्षेत्र में दलहन का कुल उत्पादन भूमि 24434 हेक्टेयर है जो कुल कृषि क्षेत्र का 7. 07 प्रतिशत भूमि पर है। सर्वाधिक उत्पादन सांगीपुर विकासखण्ड में 2589 हेक्टेयर भूमि पर है।

तिलहन

अध्ययन क्षेत्र प्रतापगढ़ में तिलहन का कुल उत्पादन भूमि 2131 हेक्टेयर है जो कुल कुल कृषि क्षेत्र पर 0.62 प्रतिशत पर है। सर्वाधिक तिलहन का उत्पादन क्षेत्र सड़वाचंदिका विकासखण्ड में 247 हेक्टेयर भूमि पर है।

अन्य फसलें

अन्य फसलों के अन्तर्गत कुल उत्पादन भौगोलिक भूमि क्षेत्र 12568 हेक्टेयर भूमि है जो कुल कृषि क्षेत्र का 3.64 प्रतिशत है।

फसल प्रतिरूप

फसल प्रतिरूप से हमारा अभिप्राय किसी समय विशेष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल के अनुपात से है। फसल प्रतिरूप में परिवर्तन का अर्थ विभिन्न फसलों के अधीन क्षेत्रफल में फेरबदल से है। फसलों को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा गया है जिसमें खाद्य एवं खाद्येतर फसलें सम्मिलित हैं। यद्यपि कृषि विशेषज्ञों की अवधारणा है कि किसी देश अथवा प्रदेश के फसलों के प्रतिरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता जबकि कतिपय विद्वान यह मानते हैं कि सुविचारित नीति के सहारे दशाओं में परिवर्तन करके फसल प्रतिरूप को बदला जा सकता है। एक ऐसे कृषि प्रधान समाज में जिसके सदस्य परम्पराबद्ध और अप्रशिक्षित हों वहां के फसल के परिवर्तन की अधिक सम्भावना नहीं रहती है। इसीलिए समय के संदर्भ में भारत जैसे देश में फसल प्रतिरूप बदल गया है। फसल के प्रतिरूप को निर्धारित करने वाले बहुत से कारक हैं उनमें भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक एवं राजनीतिक एवं कृषि शिक्षा आदि प्रमुख हैं इनमें विशेष आवश्यकता का महत्व सर्वोपरि है क्योंकि राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुसार ही नीतियों का निर्धारण हुआ है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत कृषि है। अध्ययन क्षेत्र की 86 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से सम्बन्धित उद्योगों पर आधारित है। यह कृषकों के जीवन का एक अभिन्न अंग के साथ–साथ हमारे पूर्वजों का धरोहर है।यह कृषि कार्य पवित्र कर्तव्य के समान है। कृषि का सम्बन्ध न केवल खाद्यान्न फसलों से अपितु अनेक उद्योगों के लिये कच्चे माल की आपूर्ति करना है। अतः अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान कृषि में वैज्ञानिक एवं जैविक कृषि

को बढ़ावा देना होगा साथ ही सिंचाई के साधनों में टपक एवं फौव्वारा विधि को विशेष ध्यान देना होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *चोपड़ा, जे. के. : पर्यावरण एवं परिस्थितिकी जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन, युनिक पब्लिसर्स नई दिल्ली, 2014 पृ0 50–52*
2. *मिश्रा, जे0 पी0: भारत का भूगोल, कृषि 2001, पृ0 148–149.*
3. *तिवारी, आर0 सी0, : भारत का भूगोल, सिंचाई, 2008, पृ0 171–172.*
4. *सिंह, ब्रजभूषण: कृषि भूगोल, 2002, पृ0 135*
5. *जिला सांख्यिकी पत्रिका, कार्यालय जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी, 2017–18*
4. *परीक्षा मंथन : पर्यावरण के विधि तंत्र मंथन प्रकाशन, तासकंद मार्ग, इलाहाबाद, 2013 पृ0 165–168*